अज्ञेयवाद (Kant)

काट के समीक्षावादी दर्शन का परिणामी निष्कर्ष अज्ञेयवाद के रूप में हुआ| कांट किसी वस्तु में निहित दो सत्ताओ के भेद को मानते हैं| पहली सत्ता जिसे वे यथार्थ अथवा परमार्थिक सत (Noumena) कहते हैं| उसे वे वस्तु अपने आप में जो है (The Thing in-itself) कहते हैं| उनके अनुसार परमार्थिक सत्ता तक बुद्धि विकल्पों की गति नहीं होती है| इसलिए परमार्थ   या यथार्थ सत अज्ञेय है| इस प्रकार कांट परमार्थ की सत्ता को मानते हुए उसे अज्ञेय कहते हैं| दूसरी सत्ता जिसे वे व्यवहारिक या अनुभवीक (Phenomena) सत्ता कहते हैं| यह वस्तु की वह सत्ता है जो वस्तु की दृश्यमान सत्ता है और जिसका साक्षात्कार हम प्रत्यक्ष के द्वारा कर पाते हैं|

बुद्धि विकल्प इंद्रिय संवेदना को व्यवस्थित और नियमित करके उनको ज्ञान का रूप देते हैं| ज्ञान की सार्वभौमिकता और अनिवार्यता इन विकल्पों से आती है| संवेदना के अभाव में बुद्धि विकल्पों के पास नियमित करने के लिए कोई सामग्री नहीं रहती, अतः संवेदन के अभाव में सत्य ज्ञान नहीं हो सकता| बुद्धि विकल्पों का कार्य व्यवहार तक ही सीमित है, परमार्थ तक इनकी गति नहीं है| हमारे ज्ञान के सारे संबंध बारह बुद्धि विकल्पों के अंतर्गत आ जाते हैं| इन बारह बुद्धि विकल्पों से हमारा सारा व्यावहारिक ज्ञान बनता है| यह सार्वभौम और अनुभव निरपेक्ष हैं| यह अनुभव के जनक हैं|

बुद्धि विकल्प विशुद्ध ज्ञाता की शक्ति के आधार पर, इंद्रिय संवेदना को संबद्ध और नियमित ज्ञान का रूप देते हैं और इसलिए यदि बुद्धि विकल्प ना हो तो कोई वस्तु हमारे ज्ञान या अनुभव का विषय नहीं बन सकती| यहां एक अत्यंत महत्वपूर्ण बात सामने आती है कि हमारे सत्य ज्ञान के लिए इंद्रिय संवेदन नितांत आवश्यक है| बुद्धि विकल्प

इंद्रिय संवेदना को ही ज्ञान का रूप दे सकते हैं| यदि संवेदना ना हो, तो ज्ञान का रूप किसे दिया जाएगा? संवेदना के अभाव में बुद्धि विकल्प शूण्य और निष्क्रिय रहेंगे| जब तक इन साचो में ढलने के लिए कोई सामग्री नहीं आएगी, यह सांचे बेकार रहेंगे| अतः कांट के अनुसार हमारा सारा ज्ञान इंद्रिय संवेदना के व्यवहार तक ही सीमित है| अतिंद्रीय परमार्थ हमारे लिए अज्ञेय है| यही हमारी ज्ञान की सीमा है| इसे कांट का अज्ञेयवाद कहते हैं|

कांट के अनुसार देश और काल के कारण ही हमारा अनुभव संभव होता है| बाह्य जगत का अनुभव काल और देश दोनों द्वारों में से निकलकर ज्ञान बनता है| प्रत्येक अनुभव चाहे वह बाह्य जगत का हो चाहे मानसिक अवस्थाओं का काल से आश्रित होकर ही हो सकता है| इसके अतिरिक्त बाह्य जगत के अनुभव को देश से भी आवृत होना पड़ता है| देश और काल वे चश्मे हैं जिनको लगाकर ही हम वस्तुओं या घटनाओं को देख सकते हैं| हमारे व्यावहारिक जगत का दिक काल से संयुक्त होना अनिवार्य है| परंतु परमार्थ तक देश और काल की गति नहीं है| हम यह नहीं कह सकते कि वस्तु अपने आप में जो है वह देशकाल अविभाज्य है| हम केवल यही कह सकते हैं कि इसका ज्ञान हमें हो सकता है वह देशकाल अविभाज्य है| अतः परमार्थ सत हमारे लिए अज्ञेय है|

कांट ने सत्ता का भेद व्यवहारिक (Phenomena) और परमार्थिक (Noumena) सत्ता के रूप में किया| कांट व्यवहार और परमार्थ में स्पष्ट भेद करते हैं| हम व्यवहार को ही जान सकते हैं, परमार्थ को नहीं| व्यवहार का ज्ञान सत्य और निश्चित होता है; क्योंकि यह ज्ञान इंद्रिय संवेदना को ज्ञान के रूप में परिणत करके बनाया गया है और इस ज्ञान के संवादी परमार्थिक पदार्थ वस्तु जगत में विद्यमान हैं| परमार्थ अतिंद्रीय है| उसका प्रत्यक्ष नहीं होता| अतः उसका कोई संवेदना नहीं होता| संवेदन के अभाव में ज्ञान के लिए कोई सामग्री नहीं प्रस्तुत होती| संवेदन के अभाव में बुद्धि विकल्प भी परमार्थ पर लागू नहीं होते| संवेदन के अभाव में देश काल भी परमार्थ को परिछिन्न नही कर

सकते| बुद्धि विकल्प अपनी शक्ति विशुद्ध ज्ञाता से लेते हैं| किंतु ज्ञान की सामग्री के अभाव में बुद्धि विकल्प सक्रिय नहीं हो सकते और विशुद्ध ज्ञाता से शक्ति लेने का प्रश्न ही नहीं उठता| अतः इंद्रिय संवेदना के अभाव के कारण अतींद्रिय परमार्थ का ज्ञान हमें नहीं हो सकता|

ज्ञान बनने के लिए इंद्रिय संवेदना को देश काल के द्वारों से निकलकर बुद्धि विकल्पों के साचो में ढलना पड़ता है| अतः ज्ञान की सामग्री के लिए संवेदना का होना अनिवार्य है| ज्ञान का सत्यत्व संवेदना से आता है; क्योंकि संवेदन परमार्थ द्वारा उत्थापित होते हैं| संवेदनजन्य ज्ञान के वास्तविक मूलरूप परमार्थ वस्तु जगत में विद्यमान होते हैं| किंतु संवेदना में सार्वभौमिकता और अनिवार्य निश्चय नहीं हो सकता है| यह बुद्धि विकल्पों से आता है| अतः हमारा ज्ञान सत्य और सार्वभौम होता है| इंद्रिय संवेदना के कारण सत्य और बुद्धि विकल्पों के कारण सार्वभौम| गणित में सत्यता और सार्वभौमिकता देशकाल के कारण आती है| भौतिक विज्ञान में सत्यता और सार्वभौमिकता बुद्धि विकल्पों के कारण आती है| ज्ञान या अनुभव बिना बुद्धि विकल्पों के नहीं हो सकता| बुद्धि विकल्प इंद्रिय संवेदना को संबद्ध करके उन्हें ज्ञान का विषय बनाते हैं| अतः हमारा ज्ञान देश और काल की सीमा से परिछिन्न और हमारे बुद्धि विकल्पों से निर्मित होता है| हम वास्तविक पदार्थों को, परमार्थ को उनके वास्तविक रूप में नहीं देख सकते क्योंकि यह पदार्थ अतिंद्रीय हैं| हम इनके द्वारा उत्थापित संवेदना को ज्ञान के रूप में परिणत करके उन्हें ही देख सकते हैं| हमारा जगत हमारे देश काल की सीमा से परिछिन्न और हमारे बुद्धि विकल्पों से निर्मित जगत है| यह वस्तु जगत नहीं है| अतः कांट व्यवहार और परमार्थ में स्पष्ट भेद करते हैं| हम व्यवहार को ही जान सकते हैं परमार्थ को नहीं|

जिस प्रकार गणित तथा भौतिक विज्ञान में अनुभव निरपेक्ष वाक्यों द्वारा सार्वभौम और निश्चित ज्ञान प्राप्त किया

जाता है, उसी प्रकार क्या दर्शन में भी सार्वभौम और सत्य ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है? कांट ज्ञान की सार्वभौमिकता और निश्चयात्मकता को मानते हैं इसलिए कांट ने ज्ञान जगत को दो भागों में बांट दिया- एक को व्यवहार जगत और दूसरे को परमार्थ जगत| व्यवहार जगत की सामग्री इंद्रिय संवेदना द्वारा आती है| जबकि परमार्थ जगत में इंद्रिय संवेदना की गति नहीं है| व्यवहार जगत तक का ही ज्ञान हमें हो सकता है, परंतु परमार्थ विषैले अतिंद्रीय होते हैं उनका हमें सत्य और निश्चित ज्ञान संभव नहीं है| परमार्थ के विषय में जो ज्ञान होता है उसकी सामग्री अनुभव से नहीं प्राप्त होती है| कांट के अनुसार हमारा ज्ञान व्यवहार जगत तक संभव है| परमार्थ का ज्ञान प्राप्त करना हमारी बुद्धि की सामर्थ्य के बाहर है| इस प्रकार कांट व्यवहार जगत और परमार्थ जगत की परिकल्पना करते हुए व्यावहारिक जगत को हमारे ज्ञान के दायरे में रखा तथा परमार्थ जगत को हमारे किसी भी प्रकार की ज्ञान से बाहर रखा| इस प्रकार उनके दर्शन में अज्ञेयवाद की स्थापना हुई| कांट का मत अज्ञेयवाद भी कहलाता है| अपने अज्ञेयवादी विचार के अनुसार स्पष्ट रूप से कहते हैं कि हमें मात्र व्यवहार जगत का ज्ञान है| परमार्थ के विषय में हमारी पहुंच नहीं है| इसके अनुसार परमार्थ का ज्ञान संभव नहीं है| वस्तु के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हमारे लिए संभव नहीं है| कांट इस विचार सिद्ध कर दिया कि हमारा सारा ज्ञान इंद्रिय संवेदना के व्यवहार तक सीमित है| परमार्थ तक उसकी पहुंच नहीं है| अर्थात दर्शन के परमार्थिक क्षेत्र में यह ज्ञान संभव नहीं है| हम जिस जगह को जानते हैं, ऐसा जगत है जिससे बुद्धि ने अपनी धारणाओं के अनुकूल गठित किया है| इसका अर्थ यह हुआ कि हम वस्तुओं का यथार्थ या असली रूप नहीं जानते| यथार्थ वस्तु में बुद्धि की पकड़ में नहीं आती| यथार्थ वस्तुओं(Things in Themselves) के बारे में सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि वे हमारे संवेदन समूह की हेतु हैं| क्योंकि बुद्धि कभी अपने को अपने धारणाओं से अलग नहीं करती | इसलिए वह कभी वस्तुओं के यथार्थ रूप को नहीं जान सकती| यदि कोई व्यक्ति हरा चश्मा लगा ले तो जिस प्रकार उसे वस्तुओं का असली रंग

नहीं दिखेगा, उसी प्रकार बुद्धि को वस्तु में अपनी यथार्थता में नहीं दिखती, बुद्धि की धारणा है, कट्टर मनुष्य के पक्षपातों की तरह, उसे कभी बाह्य जगत की असली रूप नहीं देखने देती| इस प्रकार कांट वस्तु सत्ता के ज्ञान को दो भागों में विभाजित कर देता है| यथार्थ या परमार्थ वस्तुओं का जगत एक है और अनुभूत वस्तुओं का दूसरा| यथार्थ या परमार्थ वस्तुओं को कांट परमार्थ जगत (Noumena) की संज्ञा देते हैं अनुभव जगत को व्यावहारिक जगत(Phenomena)| वस्तु सत्ता को परमार्थिक और व्यावहारिक जगत में विभक्त करके कांट कहते हैं परमार्थ जगत अज्ञेय है| अपने यथार्थ या परमार्थ रूप में वस्तुएं अज्ञेय हैं|